ॐ

~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय।

कक्षा-अष्टम विषय हिन्दी

दिनांक-24/06/2020 **बाट की पहचान**

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

प्यारे बच्चों आपसे मुखातिब हुए बहुत दिन हो गए हैं लेकिन परिस्थितियाँ कुछ ऐसी हैं कि हम लोग एक-दूसरे से बिना मुखातिब हुए अपने जिंदगी के सफर में आगे बढ़ रहें हैं। अध्ययन सामग्री पर जाने से पूर्व बच्चों, आज मैं थोड़ी सी अपनी बात कर रही हूँ,जो आपके लिए
~~~~~~~~

भी बहुत लाभकारी है। दो बातें तन- मन के स्वास्थ्य की सवारी के लिए।

आज के भाग-दौड़ भरे जीवन में स्वास्थ्य संकट विकराल रूप लेता जा रहा है और साथ ही अधिकांश लोग बहुत जटिल एवं भारी व्यायाम करने की स्थिति में भी नहीं दिखते हैं ,ऐसे में साइकिल सवारी एक वरदान से कम नहीं ,जिसके स्वास्थ्यवर्धक लाभ अनगिनत हैं। आज के पर्यावरण संकट के दौर में तो इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। आश्चर्य नहीं कि 21वीं सदी का वाहन साइकिल को ही कहा गया है। आज वैज्ञानिक शोध भी साइकिल सवारी के तमाम लाभों को सिद्ध कर रहे हैं और शायद अब समय इसके महत्व को हृदयंगम करने व इसको व्यापक स्तर पर अपनाए जाने का है। अतः अपने स्वास्थ्य के लिए सचेत रहें, क्योंकि जब आपका तन स्वस्थ रहेगा तभी मन भी स्वस्थ रहेगा और जब मन स्वस्थ रहेगा तभी आपको किसी भी कार्य में मन लगेगा।

चलिए, अब चलते हैं, आज के अध्ययन सामग्री की तरफ ।

बाट की पहचान

----डॉ.हरिवंशराय "बच्चन"

है अनिश्चित .....

.....

.....ऐसी आन कर ले।

प्रसंग-:

इस पद में कवि जीवन- पथ में आने वाले सुख-दु:ख के प्रति सचेत करते हुए, मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दे रहे हैं।

व्याख्या-

कवि कहते हैं कि हे जीवन -पथ के राहगीर! यह नहीं बताया जा सकता है कि तेरे मार्ग में कब ,किस स्थान पर

नदी, पर्वत और गुफाएँ मिलेंगी तेरे मार्ग में कब कठिनाइयाँ और बाधाएँ आएँगी, यह नहीं कहा जा सकता। यह भी नहीं कहा जा सकता कि तेरे जीवन के मार्ग में किस स्थान पर सुंदर वन और उपवन मिलेंगे। तेरे जीवन में कब सुख सुविधाएं प्राप्त होंगी। यह निश्चित नहीं कहा जा सकता कि कब तेरी जीवन -यात्रा समाप्त होगी और कब तेरी मृत्यु होगी।

आगे कवि बताते हैं कि यह बात भी अनिश्चित है कि मार्ग में कब तुझे फूल मिलेंगे और कब काँटे तुझे घायल करेंगे। तेरे जीवन मार्ग में कौन परिचित व्यक्ति मिलेंगे और कौन प्रिय जन अचानक तुझे छोड़ जाएँगे।

इसलिए हे पथिक! तू अपने, मन में ऐसा प्रण कर लें कि जीवन की कठिनाइयों की परवाह न करके तुझे आगे बढ़ते जाना है ।हे जीवन- पथ के यात्री! तू पथ पर चलने से पूर्व जीवन में आने वाले सुख-दु:ख को भलीभाँति जानकर अपने मार्ग की पहचान कर ले।

काव्य सौंदर्य –

- कवि ने जीवन में आने वाली कठिनाइयों के प्रति मानव को सचेत किया है।
- भाषा- सरल- खड़ीबोली
- शैली- प्रतीकात्मक ,वर्णनात्मक

कठिन शब्दार्थ –

- गह्वर= गुफा
- शर=बाण
- आन= प्रतिज्ञा
- बाट= मार्ग

छात्र कार्य-

1. कविता का भावार्थ अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें एवं पढ़ें ।
2. कठिन शब्दार्थ लिखिए व याद करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”